अध्याय – 4

अर्थव्यवस्था : सेवा क्षेत्र एवं अधोसंरचना

हम पढ़ेंगे

18.1 अर्थव्यवस्था के क्षेत्र
18.2 अर्थव्यवस्था के क्षेत्र एवं राष्ट्रीय आय
18.3 तृतीयक या सेवा क्षेत्र की भागीदारी बढ़ने के कारण
18.4 सेवा क्षेत्र का महत्व
18.5 अधोसंरचना का अर्थ
18.6 अधोसंरचना के प्रमुख अंग
18.7 भारतीय सेवाओं का विश्व में योगदान

किसी भी देश की जनशक्ति अपने जीवनयापन हेतु विभिन्न प्रकार की गतिविधियों में लगी रहती है। कोई खेती करता है, तो कोई कारखाने में लगा रहता है, या व्यापार करता है। इन गतिविधियों से ही उसे आय प्राप्त होती है। अत: अर्थव्यवस्था को ठीक से समझने के लिए यह आवश्यक है कि उन क्षेत्रों का अध्ययन किया जावे जिनमें देश की जनशक्ति कार्यरत है।

सामान्यत: जहाँ प्राकृतिक साधनों का प्रत्यक्ष उपयोग किया जाता है, जैसे खेती करना, खदान से कोयला निकालना या वनों से लकड़ी प्राप्त करना, इन्हें **प्राथमिक क्षेत्र** की गतिविधियाँ कहा जाता है। पिछड़े एवं विकासशील देशों में अधिकांश जनशक्ति इसी क्षेत्र में लगी रहती है। किन्तु जैसे-जैसे आर्थिक विकास होता है, वैसे-वैसे जनशक्ति प्राथमिक क्षेत्र से हस्तान्तरित होकर द्वितीयक क्षेत्र में लग जाती है। **द्वितीयक क्षेत्र** में प्राकृतिक उत्पादों को विनिर्माण के द्वारा अनेक उपयोगी रूपों में परिवर्तित किया जाता है। उदाहरण के लिये गन्ने से शक्कर बनाना या चूना-मिट्टी से सीमेन्ट और फिर मकान बनाना। इस प्रकार के सभी उद्योगों को द्वितीयक क्षेत्र में रखा जाता है।

प्राथमिक एवं द्वितीयक क्षेत्रों के अतिरिक्त आर्थिक गतिविधियों की एक तीसरी श्रेणी भी होती है। जिसे **तृतीयक क्षेत्र** के नाम से जाना जाता है। इस क्षेत्र की गतिविधियाँ प्राथमिक एवं द्वितीयक क्षेत्रों के विकास में सहायता करती हैं। यातायात, बैंक, शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाएँ आदि इसी क्षेत्र में आती हैं। यह आधारभूत क्षेत्र होता है, जिसके बिना देश की अर्थव्यवस्था तीव्र गति से विकास नहीं कर सकती। रेल, सड़क और वायु परिवहन भी इसी क्षेत्र में आते हैं।

18.1 अर्थव्यवस्था के क्षेत्र

किसी भी अर्थव्यवस्था को ठीक से समझने के लिए उसे तीन क्षेत्रों में बाँटा जाता है, यथा प्राथमिक क्षेत्र, द्वितीयक क्षेत्र और तृतीयक क्षेत्र। इन क्षेत्रों का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार है –

1. **प्राथमिक क्षेत्र** (Primary Sector) – प्राकृतिक संसाधनों पर प्रत्यक्ष रुप से आधारित गतिविधियों को प्राथमिक क्षेत्र कहा जाता है। उदाहरण के लिए कृषि को लिया जा सकता है। फसलों को उपजाने के लिए मुख्यत: प्राकृतिक कारकों, जैसे मिट्टी, वर्षा, सूर्य का प्रकाश, वायु आदि पर निर्भर रहना पड़ता है। अत: कृषि उपज एक प्राकृतिक उत्पाद है। इसी प्रकार वन, पशुपालन, खनिज आदि को भी प्राथमिक क्षेत्र के अन्तर्गत लिया जाता है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि **जब हम प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करके किसी वस्तु का उत्पादन करते हैं तो इसे प्राथमिक क्षेत्र की गतिविधियाँ कहा जाता है।**

यहाँ यह प्रश्न उठता है कि इन गतिविधियों को प्राथमिक क्यों कहा जाता है? कारण यह है कि प्राथमिक क्षेत्र उन सभी उत्पादों का आधार है, जिन्हें हम बाद में निर्मित करते हैं। उदाहरणार्थ – कच्चे लोहे का उपयोग इस्पात कारखाने में होता है और विभिन्न प्रकार की मशीनों का निर्माण होता है। अधिकांश प्राकृतिक उत्पाद कृषि, पशुपालन, मछली पालन, वन एवं खनिज से प्राप्त होते हैं, अत: इस क्षेत्र को **कृषि एवं सहायक क्षेत्र** भी कहते

हैं।

2. **द्वितीयक क्षेत्र** (Secondary Sector) – इस क्षेत्र की गतिविधियों के अन्तर्गत प्राकृतिक उत्पादों को विनिर्माण प्रणाली के माध्यम से अन्य रुपों में परिवर्तित किया जाता है। उदाहरण के लिये लोहे से मशीन बनाना या कपास से कपड़ा बनाना आदि। यह प्राथमिक गतिविधियों के बाद अगला कदम है। इस क्षेत्र में वस्तुएँ सीधे प्रकृति से उत्पादित नहीं होती हैं, वरन उन्हें मानवीय क्रियाओं के द्वारा निर्मित किया जाता है। ये क्रियाएँ किसी कारखाने या घर में हो सकती हैं। चूँकि यह क्षेत्र क्रमशः संबधित विभिन्न प्रकार के उद्योगों से जुड़ा हुआ है, इसलिए इसे **औद्योगिक क्षेत्र** भी कहा जाता है।

3. **तृतीयक क्षेत्र** – इस क्षेत्र की गतिविधियाँ प्राथमिक एवं द्वितीयक क्षेत्र से भिन्न होती हैं। तृतीयक क्षेत्र की गतिविधियाँ स्वतः वस्तुओं का उत्पादन नहीं करती, वरन् उत्पादन प्रक्रिया में सहयोग करती हैं। उदाहरणार्थ– प्राथमिक और द्वितीयक क्षेत्रों द्वारा उत्पादित वस्तुओं को थोक एवं फुटकर बाजारों में बेचने के लिए रेल या ट्रक द्वारा परिवहन करने की आवश्यकता पड़ती है। उद्योगों से बने हुए माल को रखने के लिए गोदामों की आवश्यकता होती है। प्राथमिक एवं द्वितीयक क्षेत्रों में उत्पादन करने के लिए बैंकों से ऋण लेने की आवश्यकता होती है। उत्पादन एवं व्यापार में सुविधा के लिए टेलीफोन, इन्टरनेट, पोस्ट ऑफिस, कुरियर सेवाओं आदि की आवश्यकता होती है।

इस प्रकार **परिवहन, भण्डारण, संचार, बैंक, व्यापार आदि से सम्बन्धित गतिविधियाँ तृतीयक क्षेत्र में आती हैं।** इन गतिविधियों के विस्तार से ही आर्थिक विकास को गति मिलती है। चूँकि, तृतीयक क्षेत्र की गतिविधियों से वस्तुओं के स्थान पर सेवाओं का सृजन होता है, अतः इसे **सेवा क्षेत्र** भी कहा जाता है।

अर्थव्यवस्था में कुछ ऐसी सेवाएँ भी होती है जो वस्तुओं के उत्पादन में प्रत्यक्ष योगदान न देकर अप्रत्यक्ष रुप से सहायता करती हैं। उदाहरण के लिए शिक्षक, डाक्टर, वकील, लेखाकर्मी, प्रशासनिक अधिकारी आदि की सेवाओं को लिया जा सकता है। धोबी, नाई एवं मोची की सेवाएँ भी महत्वपूर्ण होती हैं। वर्तमान समय में सूचना प्रौद्योगिकी पर आधारित सेवाएँ जैसे इंटरनेट कैफे, ए.टी.एम. बूथ, काल सेन्टर, सॉफ्टवेयर निर्माण आदि का भी उत्पादन की गतिविधियों में महत्वपूर्ण स्थान है।

18.2 अर्थव्यवस्था के क्षेत्र एवं राष्ट्रीय आय

एक देश की राष्ट्रीय आय या सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) की गणना के लिये उस देश के प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्रों को आधार माना जाता है। इसके लिये सबसे पहले इन तीनों क्षेत्रों से प्राप्त उत्पादन के मौद्रिक मूल्य की गणना की जाती है। तदुपरांत इन अलग-अलग क्षेत्रों से प्राप्त मौद्रिक मूल्य को जोड़ा जाता है। इस प्रकार देश का सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) या राष्ट्रीय आय के आंकड़े प्राप्त हो जाते हैं। उदाहरण के लिये मान ले कि एक देश में प्राथमिक क्षेत्र से 100 करोड़ रु., द्वितीयक क्षेत्र से 75 करोड़ रु. एवं तृतीयक क्षेत्र से 150 करोड़ की आय होती है। अतः कुल राष्ट्रीय आय 325 (100 + 75 + 150 = 325) करोड़ रु होगी।

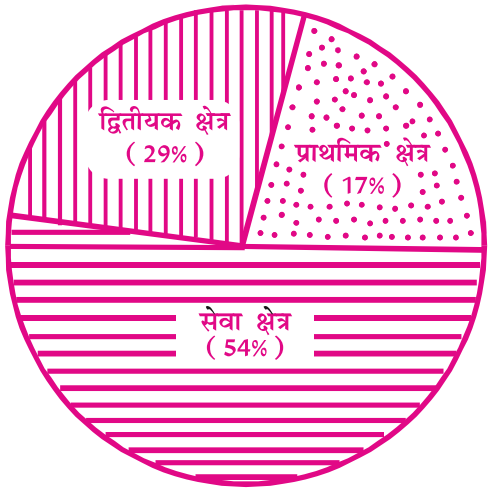

अनुभव यह बताता है कि आर्थिक विकास के साथ-साथ जहाँ प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्रों से प्राप्त आय में वृद्धि होती है, वहीं इनके तुलनात्मक योगदान में भी परिवर्तन होता है। यह देखा गया है कि **जैसे-जैसे किसी देश में आर्थिक विकास होता है, वैसे-वैसे कुल राष्ट्रीय आय में प्राथमिक क्षेत्र का योगदान क्रमशः कम होता जाता है, तथा तृतीयक या सेवा क्षेत्र**

का योगदान बढ़ता जाता है।

आर्थिक नियोजन के 58 वर्षों में भारत की आय कई गुना बढ़ी है। किन्तु इसके साथ-साथ यह बात भी स्पष्ट होती है कि इस अवधि में प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्रों का योगदान भी तुलनात्मक रूप से बदला है। जहाँ सन् 1951 में प्राथमिक क्षेत्र का योगदान लगभग 60 प्रतिशत था वह घटकर वर्ष 2006 में लगभग 21.7 प्रतिशत रह गया एवं 2011 में 17 प्रतिशत रह गया। इसके विपरीत तृतीयक या सेवा क्षेत्र का योगदान जो कि वर्ष 1951 में 28 प्रतिशत था बढ़कर वर्ष 2008 में 54 प्रतिशत से भी अधिक हो गया है। इस प्रकार स्पष्ट है कि भारत में तृतीयक या सेवा क्षेत्र का महत्व क्रमशः बढ़ रहा है।

18.3 तृतीयक या सेवा क्षेत्र की भागीदारी बढ़ने के कारण

भारतीय अर्थव्यवस्था के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि पिछले 60 वर्षों में यद्यपि सभी क्षेत्रों के उत्पादन में वृद्धि हुई है, तथापि तृतीयक क्षेत्र की भागीदारी सबसे अधिक रही है। अब तृतीयक क्षेत्र देश में सबसे बड़े उत्पादक एव आय सृजक क्षेत्र के रूप में उभरा है। भारत में तृतीयक क्षेत्र के योगदान में तेजी से हुई वृद्धि के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं -

1. स्वतंत्रता के बाद देश में पंचवर्षीय योजनाओं का क्रियान्वयन किया गया। इससे देश में सार्वजनिक क्षेत्र का तेजी से विस्तार हुआ। देश में अनेक सेवाएँ जैसे - चिकित्सालय, शैक्षणिक संस्थाएँ, डाक एवं तार, परिवहन, बैंक, बीमा कम्पनी, स्थानीय संस्थाएँ, सुरक्षा सेवाएँ, न्याय व्यवस्था आदि का विस्तार हुआ। फलतः स्वतंत्रता के बाद इन सेवाओं का विस्तार तेजी से हुआ और परिणामस्वरुप अर्थव्यवस्था में इनकी भागीदारी तेजी से बढ़ी है।

2. देश में प्राथमिक एवं द्वितीयक क्षेत्रों का पिछले वर्षों में तेजी से विस्तार हुआ। औद्योगिक क्रान्ति के साथ-साथ देश में हरित क्रान्ति भी सफल रही। इससे परिवहन, व्यापार, भण्डारण, बैंकिग जैसी सेवाओं की माँग में वृद्धि हुई और परिणामस्वरुप इन सेवाओं का देश में तेजी से विस्तार हुआ है।

3. प्रायः यह देखा गया है कि जैसे-जैसे आय बढ़ती है, वैसे-वैसे व्यक्तियों द्वारा अनेक प्रकार की सेवाओं के उपयोग में वृद्धि होती है। आय में वृद्धि होने से व्यक्ति निजी अस्पताल, मंहगे स्कूल, बदलते हुए परिवेश के अनुसार नई-नई वस्तुओं की खरीदी, वाहनों का उपयोग आदि पर अधिक खर्च करने लगता है। शहरों के साथ-साथ गाँवों में भी सेवाओं की माँग में वृद्धि हुई है। फलतः देश में सेवा क्षेत्र की भागीदारी में तेजी से वृद्धि हुई है।

4. पिछले कुछ वर्षों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी पर आधारित अनेक नई-नई सेवाएँ जीवन के लिये आवश्यक हो गई हैं। इससे देश में उपभोग के साथ-साथ इन सेवाओं के उत्पादन में भी तीव्र वृद्धि हुई है। ट्यूब लाइटों, टेलीविजनों, केबल कनेक्शन, मोबाइल फोन, मोटर गाड़ियाँ, स्कूटर एवं मोटर साइकिल, कम्प्यूटर और इंटरनेट, कॉल सेन्टर आदि ने भारत में उपभोक्ता वस्तुओं के बाजार को बहुत अधिक विस्तृत कर दिया है। फलतः सेवाओं के योगदान में वृद्धि हुई है।

5. वैश्वीकरण के परिणामस्वरुप भारतीयों पर पश्चिमी देशों का बहुत प्रभाव पड़ा है और उनकी सोच में परिवर्तन आया है। पहले सोच थी कि धन को बचाकर या गाड़कर रखा जाए। किन्तु आज भौतिकवाद पनप गया है। हर व्यक्ति सारी सुख-सुविधाएँ प्राप्त करना चाहता है। सिनेमा, खरीदारी, घर की सजावट, स्कूटर, कार आदि वस्तुएँ आवश्यक समझी जाने लगीं हैं। आजकल छुट्टियाँ बिताने के लिये घूमने जाना आवश्यक समझा जाने लगा है। अतः बैंक, बीमा, पर्यटन, परिवहन, होटल आदि सभी प्रकार की सेवाओं की माँग बहुत अधिक बढ़ गई है। परिणामस्वरुप सेवा क्षेत्र के योगदान में तेजी से वृद्धि हुई है।

18.4 सेवा क्षेत्र का महत्व – आय के घटक के रूप में

उत्पादन के तीनों क्षेत्र राष्ट्रीय आय के सृजन में योगदान करते हैं। पहले सेवा क्षेत्र का योगदान बहुत कम था किंतु आय एवं रोजगार दोनों ही दृष्टिकोणों से आज परिस्थितियाँ बदल गई हैं। आर्थिक विकास के साथ-साथ ही सेवा क्षेत्र का महत्व भी बढ़ गया है। रोजगार और आय के घटक के रूप में इस क्षेत्र के महत्व को निम्न प्रकार सरलता से समझा जा सकता है –

सेवा क्षेत्र का महत्व

1. **रोजगार में वृद्धि**
2. **उत्पादन में वृद्धि**
3. **बाजार का विस्तार**
4. **उद्योगों हेतु वित्त की व्यवस्था**
5. **कृषि उपज की सुरक्षा एवं कृषि का विकास**
6. **संतुलित आर्थिक विकास**
7. **देश की सुरक्षा**
8. **राष्ट्रीय आय में योगदान**
9. **विदेशी मुद्रा की प्राप्ति**

1. **रोजगार में वृद्धि** – सेवा क्षेत्र लोगों को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में रोजगार प्रदान करता है। उदाहरण के लिये भारतीय रेल्वे में 15.77 लाख कर्मचारी नियोजित हैं। यह संख्या देश में किसी भी अन्य उपक्रम की तुलना में सर्वाधिक है। रोजगार के अवसर जुटाने में परिवहन, थोक एवं फुटकर व्यापार, बैंक, शैक्षणिक संस्थाएँ, स्वास्थ्य सेवाएँ, पर्यटन एवं होटल व्यवसाय का योगदान बहुत अधिक है। ये व्यवसाय ऐसे हैं जो लद्दाख जैसे दुर्गम एवं दूरस्थ स्थानों पर भी रोजगार का सृजन करते हैं। इस प्रकार सेवा क्षेत्र बेरोजगारी दूर करने एवं लोगों की आय बढ़ाने में सहायक होता है।

2. **उत्पादन में वृद्धि** – सेवा क्षेत्र कम लागत पर एवं कम समय में अधिक उत्पादन करने एवं गुणवत्ता में वृद्धि करने में भी सहायक होता है। यह क्षेत्र दो प्रकार से सहायता पहुँचाता है– एक तो कुशल प्रशिक्षित एवं स्वस्थ श्रमिक उपलब्ध कराकर उत्पादन की गुणवत्ता बढ़ाता है। दूसरा, कुशलता एवं कार्यक्षमता में वृद्धि से उत्पादन एव आय में वृद्धि करता है।

3. **बाजार का विस्तार करने में सहायक** – सेवा क्षेत्र प्राथमिक एवं द्वितीयक क्षेत्र के उत्पादों के बाजार का विस्तार करने में सहायक होता है। कभी आपने विचार किया है कि कश्मीर के सेब आपको कैसे प्राप्त होते हैं अथवा हम इंग्लैंड से कैमरा खरीदने के लिये भाव कैसे पता करते हैं? यह सेवा क्षेत्र के कारण ही संभव है। परिवहन की सुविधा से माल एवं यात्रियों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाया जाता है। संचार के साधनों द्वारा व्यापारिक सौदे तय किये जाते है या होटल बुक किया जाता है। इससे सभी प्रकार की गतिविधियाँ सरल और सुविधाजनक हो जाती हैं।

4. **उद्योगों हेतु वित्त की व्यवस्था** – बैंक एवं अन्य वित्तीय संस्थाएँ साख का सृजन करती हैं और सभी प्रकार के उद्योगों के लिये पूँजी की पूर्ति करती हैं, फिर चाहे वित्त की अल्पकालिक आवश्यकता हो या मध्यकालिक अथवा दीर्घकालिक। उद्योगों की स्थापना से लेकर बाजार तक वस्तुएँ पहुँचाने एवं विज्ञापन करने हेतु सभी व्यवस्थाएँ सेवा क्षेत्र द्वारा की जाती हैं। संक्षेप में, सेवा क्षेत्र पूँजी संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति कर औद्योगिक विकास में सहायक होता है।

5. **कृषि उपज की सुरक्षा एवं कृषि का विकास** – निर्धन कृषकों को प्राकृतिक आपदाओं से बचाने का कार्य भी सेवा क्षेत्र द्वारा किया जाता है। वर्षा, बीमा योजना, फसल बीमा योजना, कृषि आय बीमा योजना तथा राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना आदि के द्वारा कृषि उपज की अनिश्चितता एवं जोखिम को दूर किया जाता है। साथ ही सेवा क्षेत्र कृषकों को उन्नत खाद, बीज आदि के क्रय हेतु पूँजी प्रदान कर उत्पादन बढ़ाने में सहायक

होता है। इस प्रकार सेवा क्षेत्र कृषकों की आर्थिक स्थिति में सुधार लाता है तथा कृषि उत्पादकता को बढ़ाने में सहयोग करता है।

6. **सन्तुलित आर्थिक विकास** – प्रत्येक देश में कुछ क्षेत्र तुलनात्मक दृष्टि से विकसित हो जाते हैं तथा कुछ क्षेत्र पिछड़े रह जाते हैं। परिवहन, संचार एवं वित्तीय सुविधाओं के विस्तार से पिछड़े क्षेत्रों का विकास होता है। सड़क एवं रेल मार्गों के निर्माण से पहाड़ी एवं दुर्गम स्थानों का भी विकास सम्भव होता है। इससे आर्थिक विकास के लाभ सभी क्षेत्रों के लोगों को प्राप्त होने लगते हैं।

7. **देश की सुरक्षा** – देश की सुरक्षा में भी सेवा क्षेत्र का महत्वपूर्ण स्थान है। सैनिकों को सीमाओं तक पहुँचाने और उनकी समुचित व्यवस्था करने के लिए यातायात एवं संचार साधनों की आवश्यकता होती है। सैन्य सामग्री पहुँचाने, सैनिकों के रहने-खाने की व्यवस्था करने, महत्वपूर्ण सूचनाएँ पहुँचाने आदि अनेक कार्यों में सेवा क्षेत्र का महत्वपूर्ण योगदान है।

8. **राष्ट्रीय आय में योगदान** – देश के आर्थिक विकास के साथ-साथ सेवा क्षेत्र का महत्व क्रमशः बढ़ रहा है। आज शहरी क्षेत्र हो या ग्रामीण सभी में सेवा क्षेत्र की गतिविधियाँ तेजी से बढ़ रही है। यही कारण है कि राष्ट्रीय आय का आधे से अधिक भाग अब सेवा क्षेत्र से प्राप्त हो रहा है।

9. **विदेशी मुद्रा की प्राप्ति** – पिछले कुछ वर्षों से सेवाओं के निर्यात से भी बड़ी मात्रा में विदेशी मुद्रा प्राप्त हो रही है। जहाजरानी एवं हवाई सेवाओं के साथ-साथ पर्यटन एवं वित्तीय सेवाओं से भी हमें विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है। हाल ही के वर्षों में कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर, काल सेन्टर, शिक्षा एव स्वास्थ्य के क्षेत्रों में भी काफी विकास हुआ है और अब इन सेवाओं से भी विदेशी मुद्रा प्राप्त हो रही है। आगे आने वाले वर्षों में सेवा क्षेत्र से बड़ी मात्रा में विदेशी मुद्रा प्राप्त होने की सम्भावना हैं।

18.5 अधोसंरचना का अर्थ

अधोसंरचना या आधारभूत संरचना, जैसा कि इसका नाम है, यह उत्पादन के प्राथमिक एवं द्वितीयक क्षेत्रों के विकास हेतु आधार प्रदान करती है। किसी भी देश की प्रगति कृषि एवं उद्योगों के विकास पर निर्भर है। किन्तु स्वयं कृषि उत्पादन के लिये ऊर्जा, वित्त, परिवहन आदि साधनों की आवश्यकता होती है। इसी प्रकार उद्योगों में उत्पादन के लिये मशीनरी, प्रबंध, ऊर्जा, बैंक, बीमा, परिवहन आदि साधनों की आवश्यकता होती है। ये सभी सुविधाएँ एवं सेवाएँ सम्मिलित रूप से आधारभूत संरचना कहलाती है। दूसरे शब्दों में, **अधोसंरचना से अभिप्राय उन सुविधाओं, क्रियाओं तथा सेवाओं से है, जो उत्पादन के अन्य क्षेत्रों के संचालन तथा विकास एवं दैनिक जीवन में सहायक होती हैं।**

अधो संरचना के प्रकार (Types of infrastructure)

अधो संरचना के अंतर्गत सम्मिलित क्रियाओं के आधार पर अधो-संरचना को दो भागों में बाँटा गया है-

1. **आर्थिक अधोसंरचना** (Economic infrastructure) – अधोसंरचना जो मुख्यतः शक्ति, यातायात एवं दूर संचार से सम्बन्धित होती है, को आर्थिक संरचना कहा जाता है। रेल, सड़क, बन्दरगाह, हवाई अड्डे, बाँध, विद्युत केन्द्र आदि को आर्थिक संरचना के अन्तर्गत रखा जाता है। आर्थिक विकास में इनका महत्वपूण स्थान होता है। इसीलिए इन्हें बुनियादी आर्थिक सुविधाएँ भी कहा जाता है।

2. **सामाजिक अधोसंरचना** (Social infrastructure) – सामाजिक अधोसंरचना मानव संसाधन का

विकास करने एवं मानव पूँजी निर्माण करने में सहायक होती है। शिक्षा, स्वास्थ्य, चिकित्सा आदि इसके अंग होते हैं। इनसे समाज को कुशल, निपुण एवं स्वस्थ जनशक्ति प्राप्त होती है। इससे कार्यक्षमता बढ़ती है जिससे प्राथमिक एवं द्वितीयक क्षेत्र में उत्पादन तेजी से बढ़ता है। फलतः अर्थव्यवस्था का तेजी से विकास होता है।

18.6 अधोसंरचना के प्रमुख अंग

1. **ऊर्जा** (Power) – किसी भी देश का आर्थिक विकास उपलब्ध ऊर्जा के साधनों पर निर्भर करता है। कारण यह है कि कृषि, उद्योग, खनिज, परिवहन आदि सभी क्षेत्रों में ऊर्जा की आवश्यकता होती है।

ऊर्जा के स्त्रोत – ऊर्जा के विभिन्न स्त्रोत हैं, यथा– विद्युत, कोयला, प्राकृतिक तेल एवं गैस आदि। इन सभी स्त्रोतों में सबसे अधिक महत्व विद्युत का है। विद्युत का उत्पादन तीन प्रमुख स्त्रोतों से होता है, यथा – जल विद्युत, तापीय विद्युत एवं अणु विद्युत। जल विद्युत के अन्तर्गत नदियों पर बाँध बना कर विद्युत का उत्पादन किया जाता है। तापीय विद्युत में कोयले का उपयोग होता है। अणु विद्युत में यूरेनियम एवं थोरियम का प्रयोग होता है।

भारत में लगभग 80 प्रतिशत विद्युत का उत्पादन ताप विद्युत से होता है जो मुख्यतः कोयले पर आधारित है। भारत मे अनुमानतः 21 करोड़ टन कोयले के भण्डार हैं। किन्तु यहाँ के कोयले में राख की मात्रा अधिक होती है। अतः अच्छे किस्म के कोयले का आयात आस्ट्रेलिया से किया जाता है। कोयले का उपयोग विद्युत उत्पादन के अलावा इस्पात कारखानों, रेल्वे एवं ईंट को पकाने में होता है।

प्राकृतिक तेल एवं गैस का ऊर्जा उत्पादन में महत्वपूर्ण स्थान है। किन्तु भारत को अपनी कुल आवश्यकता का लगभग 80 प्रतिशत प्राकृतिक तेल एवं पेट्रोल का आयात करना पड़ता है।

भारत में विद्युत की स्थिति – भारत में औद्योगीकरण, कृषि में यंत्रीकरण, शहरी जनसंख्या में वृद्धि एवं ग्रामों के विद्युतीकरण के कारण विद्युत की माँग में तेजी से वृद्धि हुई। स्वतंत्रता के बाद से ही विद्युत उत्पादन में वृद्धि के प्रयास किए गए। परिणामस्वरूप जहाँ वर्ष 1951 में केवल 2.3 हजार मेगावाट विद्युत का उत्पादन हुआ था बढ़कर वर्ष 2005–06 में लगभग 143.8 हजार मेगावाट विद्युत का उत्पादन हुआ। किन्तु विद्युत का उत्पादन माँग की तुलना में कम रहा और देश में विद्युत संकट पैदा हो गया। वर्तमान में स्थिति यह है कि उद्योगों एवं कृषि को पर्याप्त मात्रा में विद्युत प्राप्त नहीं हो रही है। शहरों तथा गाँवों में विद्युत की सतत् पूर्ति नहीं होती। विद्युत पूर्ति में वृद्धि करने के लिए अब निजी क्षेत्र को भी विद्युत उत्पादन की अनुमति दे दी गई है।

2. **परिवहन** (Transportation) –किसी भी देश की अर्थव्यवस्था में परिवहन का महत्वपूर्ण स्थान होता है। परिवहन का महत्व आर्थिक एवं सामाजिक दोनों दृष्टिकोणों से होता है। वस्तुतः परिवहन उत्पादकों को उपभोक्ताओं से जोड़ने की कड़ी का काम करता है। परिवहन के अनेक साधन होते हैं, जैसे बैलगाड़ी, बस, ट्रक, ट्रैक्टर, पानी का जहाज, रेल, हवाई जहाज आदि।

भारत में परिवहन का विकास प्रारम्भ में मुख्य रुप से व्यापारिक एवं प्रशासनिक सुविधाओं के दृष्टिकोण से किया गया था। किन्तु, स्वतंत्रता के बाद पंचवर्षीय योजनाओं के दौरान परिवहन का विस्तार सम्पूर्ण आर्थिक विकास को ध्यान में रखकर किया गया। संक्षेप में, देश में परिवहन के साधनों के विकास को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है –

अ. रेल परिवहन – भारत में माल एवं सवारी की ढुलाई के लिए परिवहन का सबसे सुविधाजनक

साधन रेलवे है। रेलवे का शुभारम्भ सन् 1853 में हुआ था जब प्रथम रेल बम्बई से थाणे तक चलाई गई। इसके बाद देश में रेल मार्गों का चहुमुंखी विकास हुआ। वर्ष 2005-06 तक देश में कुल 63.3 हजार किलोमीटर रेल मार्ग का निर्माण किया गया। फलतः अब **भारतीय रेलवे विश्व में अब चौथे नम्बर की रेल प्रणाली हो गई है।**

ब. सड़क परिवहन - भारत में सड़कों का विशेष महत्व है। चूँकि भारत एक गाँवों का देश है, अतः ग्रामीण क्षेत्रों में उत्पादन बढ़ाने तथा रोजगार के अवसरों में वृद्धि करने की दृष्टि से सड़कों का महत्वपूर्ण स्थान है। देश में कुल 33.4 लाख कि.मी. लम्बी सड़कें हैं। वर्तमान में अनेक महत्वाकांक्षी योजनाएँ क्रियान्वित की जा रही हैं जिनमें **स्वर्णिम चतर्भुज सड़क योजना** अत्यधिक महत्वपूर्ण है। सड़कों के तेजी से विस्तार के लिए निजी क्षेत्र को भी अब सड़कों के निर्माण कार्य में शामिल कर लिया गया है।

स. जल परिवहन - भारत की जल परिवहन प्रणाली दो प्रकार की है, प्रथम आन्तरिक जल परिवहन और द्वितीय तटीय एवं सामुद्रिक जल परिवहन। आन्तरिक जल परिवहन गहरी नदियों एवं नहरों में होता है और इसमें नाव तथा स्टीमरों का प्रयोग होता है। भारत का समुद्रतट लगभग 7600 किलोमीटर लम्बा है और इस पर 13 बड़े एवं 187 छोटे व मध्यम बन्दरगाह हैं। भारत का मुख्य विदेशी व्यापार बड़े बन्दरगाहों के द्वारा होता है।

3. संचार (Communication) - **भारत में संचार व्यवस्था विश्व में सबसे बड़ी है।** सर्वप्रथम देश में संचार सेवा की शुरुआत सन् 1837 में हुई। किन्तु इन सेवाओं का विस्तार स्वतंत्रता के बाद ही हुआ है। वर्ष 1991 से प्रारम्भ हुए आर्थिक सुधारों ने दूर संचार सेवाओं में क्रान्तिकारी परिवर्तन किए। निजी क्षेत्र की भागीदारी ने इस क्षेत्र को अभूतपूर्व विस्तार दिया। यही कारण है कि वर्ष 2006 के अन्त तक देश में टेलीफोन की संख्या 19 करोड़ हो गई और वर्ष 2007 के अन्त में यह संख्या 25 करोड़ तक पहुँचने का अनुमान है। मोबाइल सेट्स अब शहरी क्षेत्रों के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत अधिक लोकप्रिय हो गए हैं।

दूर संचार सेवाओं के विस्तार के परिणामस्वरुप भारत अब **ज्ञान आधारित समाज** की ओर तेजी से बढ़ रहा है। इंटरनेट एवं ब्राडबैंड ग्राहकों की संख्या में हो रही तेजी से वृद्धि इसका उदाहरण है। कम्प्यूटरों एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रचार-प्रसार ने डाक प्रणाली को भी आधुनिक बना दिया है। यही कारण है कि भारतीय डाक नेटवर्क अब विश्व के विकसित नेटवर्कों में से एक है। भारत ने उपग्रह प्रणाली विकसित कर ली है तथा यह बहुउद्देशीय है। इसका उपयोग दूरसंचार के साथ-साथ मौसम की जानकारी, दूरदर्शन, आकाशवाणी आदि कार्यों में किया जाता है।

4. बैंकिंग, बीमा एवं वित्त (Banking, Insurence & Finance) - तीव्र आर्थिक विकास के लिए बैंकिंग, बीमा एवं अन्य वित्तीय संस्थाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। कारण यह है कि ये संस्थाएँ अर्थव्यवस्था से बचतों को एकत्रित करके निवेश हेतु उद्यमियों को उपलब्ध कराती हैं। इससे आर्थिक गतिविधियों का विस्तार होता है और परिणामस्वरुप आय, रोजगार एवं विकास की गति में वृद्धि होती है।

वर्ष 1969 में प्रमुख बैंकों के राष्ट्रीयकरण के बाद से ही देश में व्यापारिक बैंकों ने अभूतपूर्ण प्रगति की है। वर्ष 2006 तक सभी सार्वजनिक क्षेत्र की बैंकों की शाखाएँ बढ़कर लगभग 70 हजार हो गई है। इसके साथ ही देश में निजी क्षेत्र में भी अनेक व्यापारिक बैंक एवं वित्तीय संस्थाएँ कार्यरत हैं। ये संस्थाएँ भी उद्योग एवं व्यापार के साथ-साथ घरेलू उपयोग हेतु वैयक्तिक ऋण उपलब्ध कराती हैं। पिछले कुछ वर्षों में ब्याज दरों में हुई कमी से देश में वित्तीय संस्थाओं में तेजी से विस्तार हुआ है।

देश में सहकारी बैंकिंग व्यवस्था का भी तेजी से विस्तार हुआ है। ग्रामीण क्षेत्रों में सहकारी साख समितियाँ कृषि विकास हेतु ऋण उपलब्ध कराती हैं। भारत में सहकारी बैंकों का संगठन त्रिस्तरीय है। प्रथम, राज्य स्तर पर शीर्ष बैंक (Apex Bank), द्वितीय - जिला स्तर पर केन्द्रीय सहकारी बैंक (Central Cooperative Bank) और तृतीय, ग्राम स्तर पर प्राथमिक सहकारी समितियाँ (Primary Cooperative Societies) कार्यरत हैं।

5. शिक्षा एवं स्वास्थ्य (Education and Health) - विकसित देशों का अनुभव यह दर्शाता है कि शिक्षा एवं स्वास्थ्य जैसी सामाजिक अधोसंरचना के अभाव में आर्थिक विकास सम्भव नहीं है। परन्तु यह देखा गया है कि पिछड़े एवं विकासशील देशों में संसाधनों के अभाव के कारण शिक्षा, प्रशिक्षण एवं स्वास्थ्य आदि पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता। भारत में भी इन सुविधाओं का विस्तार स्वतंत्रता के बाद पंचवर्षीय योजनाओं के दौरान हुआ है।

शिक्षा - भारत में प्रारम्भ से ही 'सभी के लिए शिक्षा' को केन्द्र में रखकर शिक्षा के विस्तार के विभिन्न कार्यक्रमों का क्रियान्वयन किया गया है। देश में शिक्षा के विस्तार के लिए वर्ष 2004 से वित्तीय स्त्रोतों को जुटाने के लिए सभी प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष केन्द्रीय करों पर 2 प्रतिशत का शिक्षा उप-कर लगाया गया है। इस राशि से बुनियादी शिक्षा के विस्तार के साथ-साथ मध्यान्ह भोजन, बालिका शिक्षा, राष्ट्रीय साक्षरता मिशन जैसी योजनाओं का क्रियान्वयन किया जा रहा है।

स्वतंत्रता के बाद से ही सभी स्तर की शैक्षणिक संस्थाओं का तीव्र गति से विस्तार हुआ है। वर्तमान में (2004) देश में कुल 7.67 लाख प्राथमिक शालाएँ, 2.74 लाख माध्यमिक शालाएँ एवं 1.52 लाख उच्चतर माध्यमिक विद्यालय हैं। इसके साथ ही देश में 3201 व्यावसायिक शिक्षा संस्थान एवं 500 विश्वविद्यालय एवं अनुसन्धान केन्द्र हैं। देश में शैक्षणिक संस्थाओं के विस्तार के कारण ही साक्षरता दर जो कि सन् 1951 में 18.33 प्रतिशत थी बढ़कर 2001 में 64.84 प्रतिशत हो गई।

स्वास्थ्य - स्वतंत्रता के बाद से ही सरकार ने देश में स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार पर विशेष जोर दिया है। सन् 1951 में प्राथमिक एवं सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों की संख्या केवल 725 थी जो बढ़कर वर्ष 2005 में 1.72 लाख हो गई। आधुनिक पद्धति के डाक्टरों की संख्या इस अवधि में 0.62 लाख से बढ़कर 6.65 लाख हो गई है। देश में मलेरिया, तपेदिक, कुष्ठ रोग, एड्स, कैंसर और मानसिक विकृतियों जैसी बीमारियों को नियंत्रित करने के विभिन्न कार्यक्रमों का क्रियान्वयन किया जा रहा है।

देश में स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार से जहाँ अनेक गंभीर रोगों के उपचार की व्यवस्था हुई है, वहीं जन-साधारण में स्वास्थ्य के प्रति चेतना जागृत हुई है। इसके परिणामस्वरुप देश में जन्म के समय जीवन प्रत्याशा में तेजी से वृद्धि हुई है। उदाहरणार्थ - वर्ष 1951 में पुरुषों की जीवन प्रत्याशा केवल 37.2 वर्ष थी जो बढ़कर 2005 में 63.9 वर्ष हो गई है। इसी प्रकार महिलाओं की जन्म के समय जीवन प्रत्याशा इस अवधि में 36.2 से बढ़कर 66.9 वर्ष हो गई है।

6. व्यापार एवं पर्यटन (Trade and Tourism)- वर्ष 2006 में जारी बैंक की रिपोर्ट के अनुसार सकल घरेलू उत्पाद के आधार पर भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व की 12 वीं बड़ी अर्थव्यवस्था हो गई है। अर्थव्यवस्था के विकास में कृषि तथा उद्योगों के साथ-साथ आन्तरिक एवं विदेशी व्यापार का भी विशेष महत्व है। आर्थिक विकास के लिए आवश्यक कच्चा माल, मशीनें एवं तकनीकी विदेशों से ही प्राप्त होती है। इसके लिए विदेशी मुद्रा की आवश्यकता होती है जो देश में उपलब्ध वस्तुओं एवं सेवाओं के निर्यात से प्राप्त होती है। इस प्रकार

स्पष्ट है कि विदेशी व्यापार के द्वारा आय, रोजगार एवं विकास दर में वृद्धि होती है।

पिछले कुछ वर्षों में भारत का विदेशी व्यापार तेजी से बढ़ा है। वर्ष 2005-06 में 695131 करोड़ रु. का आयात एवं 465705 करोड़ रु. का निर्यात किया गया है। भारत मुख्य रूप से **पेट्रोलियम पदार्थ, खाद्य तेल, रासायनिक पदार्थ, मशीनरी** आदि का **आयात** करता है। इसके साथ ही **खनिज पदार्थ, रत्न एवं आभूषण, सिले हुए वस्त्र, मछली, कम्प्यूटर साफ्टवेयर** आदि का **निर्यात** करता है। भारत का **विदेशी व्यापार** मुख्यत: **अमरीका, यूनाईटेड किंगडम, जर्मनी** एवं **रूस** से होता है।

18.7 भारतीय सेवाओं का विश्व में योगदान

भारतीय अर्थव्यवस्था में सेवा क्षेत्र के विकास का परिणाम यह है कि आज भारत विश्व के विभिन्न देशों को कई प्रकार की सेवाएँ उपलब्ध करा रहा है। नवीन आर्थिक नीति एवं उदारीकरण के परिणाम स्वरूप ही देश एवं विदेश दोनों क्षेत्र में भारतीय सेवाक्षेत्र का महत्व एवं भागीदारी निरंतर बढ़ रही है। भारत अपने सेवाक्षेत्र के माध्यम से अपने पड़ोसी देशों तथा यूरोप, अमेरिका, इंग्लैंड आदि विश्व के देशों को लाभान्वित कर रहा है।

गत कुछ वर्षों में भारत ने सेवाओं के निर्यात में तेजी से प्रगति की है। सेवा क्षेत्र का निर्यात पिछले कुछ वर्षों के दौरान तीन गुना बढ़ गया है। वर्ष 2005-06 में सेवा क्षेत्र का व्यापार 61.4 मिलियन अमरीकी डालर तक पहुँच गया है। व्यापार में यह वृद्धि मुख्यत: साफ्टवेयर सेवाएँ, कारोबारी सेवाएँ एवं संचार सेवाओं में हुई है। वर्ष 2005 में विश्व की कुल वस्तुओं के निर्यात व्यापार में भारत की भागीदारी 1.0 प्रतिशत थी, जबकि सेवाओं के निर्यात में भारत का हिस्सा 2.3 प्रतिशत रही है। भारतीय सेवाओं के विश्व में योगदान को सरलता से निम्नलिखित तरह से समझा जा सकता है-

1. **कम्प्यूटर साफ्टवेयर सेवाएँ** - भारत ने पिछले कुछ वर्षों में कम्प्यूटर के क्षेत्र में काफी उन्नति की है। बैंगलौर, हैदराबाद, पूना एवं मुम्बई कम्प्यूटर के प्रमुख केन्द्र हैं जहाँ पर निर्यात हेतु बड़ी संख्या में साफ्टवेयर तैयार किए जाते हैं। भारत से साफ्टवेयर का निर्यात विश्व के अनेक देशों में किया जाता है। अमेरिका, इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी जैसे विकसित देशों में भारतीय कम्प्यूटर साफ्टवेयर विशेष लोकप्रिय हैं।

2. **संचार सेवाएँ** - संचार सेवाओं के क्षेत्र में भी भारत विकसित देशों के समकक्ष है और दूर संचार सेवाओं का निर्यात करके विदेशी मुद्रा अर्जित कर रहा है। अब भारत अनेक देशों को दूर संचार सेवाओं के विकास हेतु सहयोग दे रहा है। मालद्वीव के 'डिजिटल चार्ट्स' का भारत द्वारा आधुनिकीकरण किया गया है तथा एक दूर संवेदी इकाई की स्थापना की गई है। नेपाल में दूरसंचार सेवाओं के लिए 'यूनाइटेड टेलीकाम' के नाम से एक संयुक्त कम्पनी का गठन किया गया है।

3. **बैंकिंग एवं वित्तीय सेवाएँ** - 30 जून, 2005 तक भारत के सार्वजनिक क्षेत्र के 8 एवं निजी क्षेत्र के 2 बैंक ने 42 देशों में अपनी शाखाएँ खोली हैं। इनमें स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, बैंक ऑफ बड़ौदा एवं बैंक ऑफ इण्डिया प्रमुख हैं। इस प्रकार बैंकिंग एवं वित्तीय सेवाओं से भी भारत को लाभ हो रहा है।

4. **तकनीकी एवं परामर्श सेवाएँ** - भारत ने अनेक क्षेत्रों में तकनीकी एवं प्रबन्धकीय कुशलता भी प्राप्त की है। फलत: भारत अनेक विकासशील एवं पिछड़े देशों को रेलवे लाईन के निर्माण, सड़क निर्माण, कारखानों के निर्माण में तकनीकी एवं परामर्श सेवाएँ दे रहा है। ईरान, अफगानिस्तान, म्यांमार, भूटान, नेपाल, मालदीप एवं अफ्रीका के कई देशों में बुनियादी संरचना से सम्बन्धित परियोजनाओं के क्रियान्वयन की जिम्मेदारी भी भारत ने ली है।

प्राथमिक क्षेत्र – अर्थव्यस्था का वह क्षेत्र जिसके अन्तर्गत प्राकृतिक संसाधनों का प्रत्यक्ष उपयोग करके वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है, जैसे- खनिज पदार्थों का उत्खनन।

द्वितीयक क्षेत्र – वह क्षेत्र जिसके अन्तर्गत मानवीय क्रियाओं के द्वारा वस्तुओं को अनेक उपयोगी रूपों में परिवर्तन किया जाता है, जैसे- उद्योग।

तृतीयक क्षेत्र – वह क्षेत्र जो अपनी सेवाओं के द्वारा उत्पादन प्रक्रिया में सहयोग प्रदान करता है, जैसे- परिवहन, विपणन, बैंकिंग, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि।

अधोसंरचना – वे सुविधाएँ एवं क्रियाएँ जो उत्पादन के कार्यों में सहायक होती हैं, को अधोसंरचना कहा जाता है, जैसे- ऊर्जा, परिवहन के साधन, बांध, शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाएँ आदि।

ज्ञान आधारित समाज – वह समाज जिसमें सभी क्रियाएँ उपलब्ध ज्ञान के आधार पर संचालित होती हैं। दूरसंचार तकनीकी के विस्तार से ज्ञान आधारित समाज की धारणा का विकास हुआ है।

शिक्षा उपकर – वह कर जो शिक्षा के विस्तार हेतु भुगतान की गई, कर की राशि पर लगाया जाता है।

आयात-निर्यात – एक देश जिन वस्तुओं को दूसरे देशों से खरीदता है, उन्हें आयात और जिन वस्तुओं को दूसरे देशों को बेचता है, उन्हें निर्यात कहा जाता है।

दूर संवेदी इकाई – उपग्रहों के माध्यम से संचालित संचार सेवाएँ, भू-जल स्तर मापना, खनिज व पेट्रोलियम पदार्थों का पता लगाना, नक्शा तैयार करना, गुप्त जानकारियाँ आदि सेवाओं का क्रियान्वयन दूर संवेदी इकाई के द्वारा होता है।

सॉफ्टवेयर सेवाएँ – कम्प्यूटर को विभिन्न प्रकार से उपयोग करने हेतु बनाया जाने वाला प्रोग्राम सॉफ्टवेयर सेवाओं के अंतर्गत आता है।

अभ्यास

सही विकल्प चुनिए –

1. जैसे-जैसे अर्थव्यवस्था विकसित होती है, राष्ट्रीय आय में तृतीयक क्षेत्र का अंश –
   (i) बढ़ता जाता है। (ii) घटता जाता है।
   (iii) बढ़ता है तत्पश्चात् घटता है। (iv) घटता है तत्पश्चात् बढ़ता है।
2. बाजार के विस्तार में सहायक होते है –
   (i) परिवहन के साधन (ii) संचार के साधन
   (iii) बैंक एवं वित्तीय संस्थाएँ (iv) उपरोक्त सभी

3. कृषि क्षेत्र सम्मिलित है –

(i) प्राथमिक क्षेत्र में (ii) द्वितीयक क्षेत्र में

(iii) तृतीयक क्षेत्र में (iv) द्वितीयक एवं तृतीयक दोनों क्षेत्र में

4. सेवा क्षेत्र रोजगार प्रदान करता है –

(i) प्रत्यक्ष रूप से (ii) अप्रत्यक्ष रूप से

(iii) प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों रूप से (iv) उपरोक्त में से कोई नहीं

5. सेवा क्षेत्र के निरंतर विकास का कारण है –

क. सरकारी हस्तक्षेप ख. कृषि एवं उद्योगों का विकास

ग. सोच में परिवर्तन घ. उपरोक्त सभी

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

क. अर्थव्यवस्था का ..... क्षेत्रों में विभाजन किया गया है।

ख. सेवा क्षेत्र अर्थव्यवस्था का ..... क्षेत्र होता है।

ग. वर्ष 2005–06 में सकल घरेलू उत्पाद में सेवा क्षेत्र का योगदान ..... प्रतिशत था।

घ. शिक्षा एवं स्वास्थ्य ..... अधोसंरचना के अंग है।

ङ. ऊर्जा आयोग का गठन मार्च ..... में किया गया।

सही जोड़ी बनाइए –

क.	परिवहन एवं संचार	प्राथमिक क्षेत्र
ख.	यूनाइटेड टेलीकाम	तृतीयक क्षेत्र
ग.	मछली पालन	नेपाल
घ.	सीमेन्ट का कारखाना	मालदीव
ङ.	डिजिटल चार्ट्स	द्वितीयक

अति लघुउत्तरीय प्रश्न –

1. देश की कुल जनसंख्या का वह भाग जो प्रत्यक्ष रूप से उत्पादक क्रियाओं में सहयोग करता है, क्या कहलाता है?
2. कार्यशील जनसंख्या का व्यावसायिक वितरण का प्रतिशत किस प्रकार का रहता है?
3. अर्थव्यवस्था के उस क्षेत्र का नाम बताइये जो कृषि एव उद्योग के संचालन में सहायता पहुँचाता है।
4. डॉक्टर, शिक्षक, नाई, धोबी, वकील आदि की सेवाएँ किस प्रकार के कार्य क्षेत्र में आती है?
5. सेवा क्षेत्र क्या है?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. अर्थव्यवस्था के क्षेत्र एवं राष्ट्रीय आय में क्या सम्बन्ध हैं, लिखिए।
2. अर्थव्यवस्था के प्राथमिक एवं द्वितीयक क्षेत्र को उदाहरण की सहायता से समझाइए।
3. सेवा क्षेत्र का कृषि एवं राष्ट्रीय आय में योगदान की विवेचना कीजिए।
4. भारत में सेवा क्षेत्र के विकास के कोई चार कारण स्पष्ट कीजिए।
5. अधोसंरचना के प्रकारों का वर्णन कीजिए।
6. भारतीय सेवाओं का विश्व में क्या योगदान हैं? लिखिए।
7. ऊर्जा एवं परिवहन के महत्व की संक्षेप में व्याख्या कीजिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. अर्थव्यवस्था को क्षेत्रों में बाँटने की आवश्यकता क्यों होती है? अर्थव्यवस्था के क्षेत्रों का वर्णन कीजिए।
2. एक आय घटक के रूप में सेवा क्षेत्र का महत्व स्पष्ट कीजिए।
3. सेवा क्षेत्र का आशय स्पष्ट कीजिये तथा सेवा क्षेत्र के महत्व की व्याख्या कीजिए।
4. अधोसंरचना का अर्थ स्पष्ट करते हुए उसके अंगों के विषय में संक्षेप में लिखिए।
5. शिक्षा एवं स्वास्थ्य का आर्थिक विकास में क्या योगदान है, लिखिए।
6. भारत में सेवा क्षेत्र के विस्तार के कारणों की व्याख्या कीजिए।